मार्च 2020

एक्ज़िमिअस:
निर्यात लाभ

खंड - XXXVI | अंक - I

इस अंक में

1. वैश्विक मूल्य श्रृंखला: भारत की स्थिति
4. व्यापार में मंदी के बीच भारत के निर्यातों में वृद्धि का उपाय है परियोजना निर्यात
6. स्वास्थ्य क्षेत्र में वृद्धि के रुझान
7. बजट 2020
8. 'कलमकारी' कला को एक्ज़िम बैंक की सहायता
9. एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएँ
10. तिमाही गतिविधियां
11. छठा एक्ज़िम बाज़ार
11. एक्ज़िमिअस शिक्षण केंद्र की गतिविधियां
12. एक्ज़िम बैंक का 35वां स्थापना दिवस वार्षिक व्याख्यान
13. चुनिंदा देशों का आर्थिक परिदृश्य
14. मुद्रा
15. एक्ज़िम मित्र
16. आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

तिमाही प्रकाशन

एक्ज़िम बैंक
EXIM BANK
भारतीय निर्यात-आयात बैंक
EXPORT-IMPORT BANK OF INDIA

केन्द्र एक भवन, 21वीं मंज़िल,
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल, कफ परेड,
मुंबई - 400 005.
फोन: 022 2217 2600
ईमेल: ccg@eximbankindia.in

www.eximbankindia.in
www.eximmitra.in

वैश्विक मूल्य श्रृंखला: भारत की स्थिति

वर्ष 2024-25 तक भारत को 5 ट्रिलियन यूएस डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर को बढ़ाकर कम से कम 8% तक बनाए रखने की जरूरत है। इसके लिए जरूरी है कि भारत अपनी अर्थव्यवस्था के घरेलू अवयवों के साथ-साथ वैश्विक व्यापार पर भी ध्यान केंद्रित करे।

हालांकि भारत से निर्यातों को बढ़ाने के लिए विभिन्न संभावित उपागम किए जा सकते हैं। तथापि, वैश्विक मूल्य श्रृंखला (ग्लोबल वैल्यू चेन - जीवीसी) में वृहत्तर एकीकरण और उच्च प्रौद्योगिकी वाले निर्यातों पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण होगा।

जीवीसी में देशों की भागीदारी बढ़ने से पूरा वैश्विक व्यापार परिदृश्य बदल रहा है। भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं को व्यापार के लाभों को भुनाने के लिए जीवीसी में भागीदारी और अधिक बढ़ानी होगी। हालांकि जीवीसी में भारत की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है, किन्तु दूसरे विकासशील देशों की तुलना में इसकी भागीदारी काफी कम है।

मूल्य श्रृंखला: संक्षिप्त परिचय

21वीं सदी में विनिर्माण पहले की तुलना में अधिक वैश्वीकृत हो गया है। अब उत्पादन, व्यापार और निवेश जीवीसी का हिस्सा हैं और लगातार व्यवस्थित तरीके से बढ़ रहे हैं। अब एक उत्पाद विभिन्न चरणों में दुनिया के अलग-अलग देशों में तैयार होता है। इसी को वैल्यू चेन कहते हैं। उत्पाद की डिजाइनिंग, विकास और नवोन्मेष उत्पादन के अपस्ट्रीम स्टेज में आते हैं। फिर आता है वह चरण जिसमें उत्पाद विनिर्मित और असेंबल किए जाते हैं। इसके बाद डाउनस्ट्रीम स्टेज आती है, जिसमें उत्पादों का परिवहन, मार्केटिंग, बिक्री और बिक्री के बाद वाली सेवाएं शामिल हैं। उत्पाद विकास, शोध एवं विकास और उत्पादन के अंतिम चरणों में भागीदारी के जरिए व्यापार से उल्लेखनीय लाभ मिलता है क्योंकि इन चरणों में उच्च मूल्ययोजन (वैल्यू एडिशन) होता है।

आर्थिक विकास को आसान बनाने के लिए मूल्य श्रृंखलाओं में भागीदारी के लाभ और हानि दोनों हैं। किसी कमोडिटी के उत्पादन के केवल एक चरण में शामिल हो जाने मात्र से भी कोई देश उस उत्पाद की वैल्यू चेन का हिस्सा बन जाता है। इससे उस देश को उस उत्पाद की उत्पादकता का लाभ तो मिलता ही है,

प्रौद्योगिकी का लाभ भी मिलता है। किन्तु इसके विपरीत देश बहुधा न्यून वैल्यू एडिशन स्टेज में ही फंसे रहकर अपने प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद करते हैं।

विकास की दृष्टि से जीवीसी के कई सकारात्मक पहलू हैं। पहला, किसी फर्म को अलग से अपनी उत्पादन क्षमता स्थापित करने के बजाय जीवीसी में शामिल होने से तुलनात्मक लाभ मिलेगा। और इस प्रकार वह फर्म वैश्विक उत्पादन नेटवर्क का भी हिस्सा बनेगी। दूसरा, जीवीसी में भागीदारी शुरू होने से रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। उदाहरण के लिए चीन में आईफोन असेंबली, भारत में बीपीओ परिचालनों तथा थाईलैंड, तुर्की और चीन में ऑटोमोबाइल और ऑटो पार्ट उत्पादन से विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में रोजगार सृजित हो रहे हैं। तीसरा, जीवीसी से विकासशील देशों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के अवसर भी मिलते हैं या फिर उस प्रौद्योगिकी के लिए स्थानीय स्तर पर कौशल विकास करने में मदद मिलती है।

जीवीसी: भारत की स्थिति

सिर्फ निर्यातों के आधार पर किसी देश की जीवीसी में भागीदारी के निष्कर्ष पर पहुंचना भ्रामक हो सकता है। क्योंकि बहुत मुमकिन है कि किसी देश से निर्यातों का आंकड़ा तो ज्यादा हो, किन्तु निर्यातों में उसका मूल्य योजन कम हो। ऐसी स्थिति किसी देश का निर्यातों के लिए मध्यवर्ती वस्तुओं के आयात पर अधिक निर्भरता के कारण हो सकती है।

जीवीसी में बैकवॉर्ड लिंकेज के जरिए भागीदारी आंकने के लिए सकल निर्यातों के विदेशी मूल्य योजित सामग्री (वैल्यू एडेड कंटेंट) को पैरामीटर के रूप में प्रयोग में लाया गया और पाया गया कि जीवीसी में भारत की भागीदारी न्यून (16.1%) है। क्योंकि भारत से सकल निर्यातों की विदेशी मूल्य योजित सामग्री ओईसीडी क्षेत्र के औसत (19.3%) से भी कम रह गई है। वस्तुतः वियतनाम जैसे देशों में निर्यात की विदेशी मूल्य योजित सामग्री भारत की तुलना में दोगुनी से अधिक (43.6%) है, क्योंकि ये देश अधिकांश मध्यवर्ती वस्तुएं दूसरे देशों से आयात करते हैं। आसियान देशों की तुलना में भारत के सकल निर्यात में विदेशी मूल्ययोजित सामग्री हमेशा आसियान देशों के औसत से कम रही है।

इसके अलावा, जीवीसी सहभागिता को फॉरवार्ड और बैकवॉर्ड लिंकेज के योग के रूप में मापा जा सकता है। चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं के लिए जीवीसी भागीदारी के विश्लेषण से पता चलता है कि अमेरिका, जापान और यूके जैसी अर्थव्यवस्थाओं के मामले में फॉरवार्ड लिंकेज, बैकवॉर्ड लिंकेज की तुलना में अधिक मजबूत हैं, जो जीवीसी से जुड़ने से निवल मूल्य योजित लाभ को दर्शाते हैं। लक्ज़मबर्ग, स्लोवाक गणराज्य, हंगरी, चीनी ताइपे, वियतनाम, मलेशिया, मेक्सिको जैसे देशों में बैकवार्ड लिंकेज बहुत उच्च हैं, जो बताते हैं कि ये अर्थव्यवस्थाएं अपने निर्यातों के लिए आयातों पर अत्यधिक निर्भर हैं। भारत के मामले में 2016 में बैकवार्ड लिंकेज 19.1% और फॉरवर्ड लिंकेज 14.9% रहा था। उल्लेखनीय है कि सऊदी अरब, नॉर्वे, कजाकिस्तान जैसी अर्थव्यवस्थाओं में अन्य देशों के बीच उच्च फॉरवर्ड लिंकेज हैं, क्योंकि उनके मुख्य निर्यात प्राकृतिक संसाधन (कच्चा तेल) हैं। परिणामस्वरूप, घरेलू मूल्ययोजन का काफी हिस्सा दूसरे देशों के निर्यातों में इस्तेमाल किया जा रहा है।

विनिर्माण जीवीसी में भारत: प्रमुख उद्योग-वार विश्लेषण

उद्योग-वार विश्लेषण से पता चलता है कि हाल के वर्षों में भारत से निर्यातों में विदेशी मूल्य योजित सामग्री लगभग हर क्षेत्र में कम हुई है। सूक्ष्म विश्लेषण बताता है कि परिवहन और भंडारण की विदेशी मूल्ययोजित सामग्री 2005 के 19.4% से घटकर 2016 में 13.8%, सूचना और संचार की (9.8% से 6.3%) और समग्र व्यापार सेवाओं की (11% से 7.9%) हो गईं। निर्यातों के सबसे ज्यादा विदेशी मूल्ययोजित सामग्री (बैकवार्ड लिंकेज) वाले क्षेत्र 'कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रिकल' (31.1%), मूलधातु और फैब्रिकेटेड धातु उत्पाद (29.6%); 'रसायन और गैर-धातु खनिज उत्पाद' (28.1%) जैसे उद्योग हैं।

इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर, अर्थव्यवस्थाएं दूसरे देशों में अंतिम उपभोक्ताओं के साथ जुड़ने में अहम भूमिका निभा रही हैं। किसी देश के घरेलू उत्पादन में विदेशी अंतिम मांग की भूमिका को विदेशी अंतिम मांग में घरेलू मूल्ययोजित संकेतक के माध्यम से पता की जा सकती है। यह संकेतक

चित्र 1: जीवीसी में चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं[1] और भारत की भागीदारी: 2015

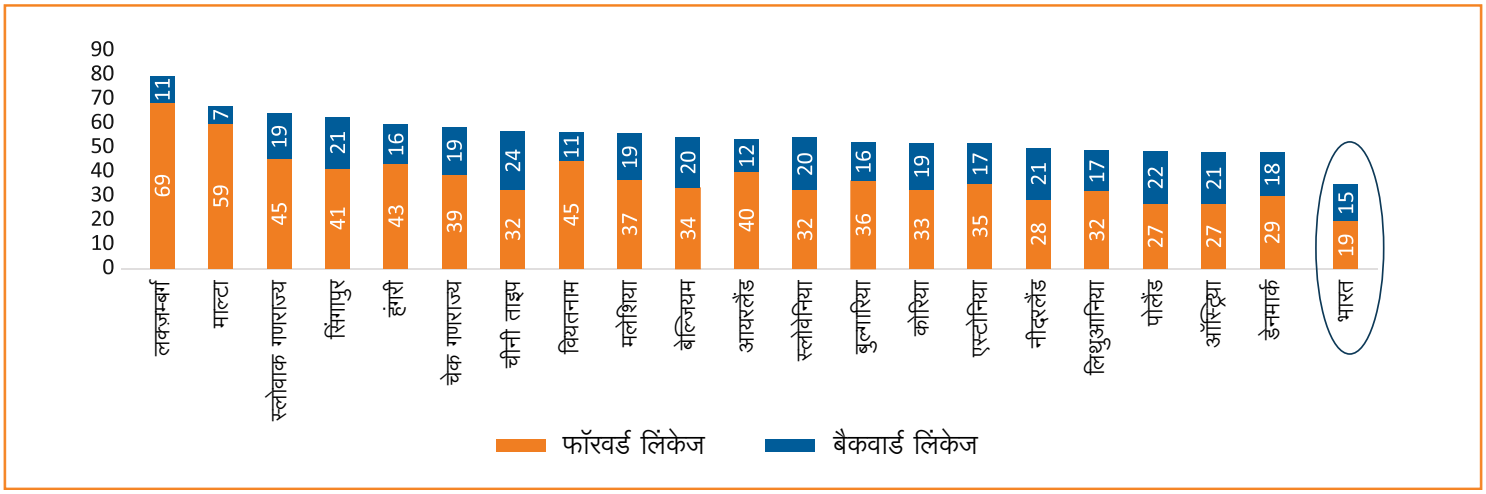

स्रोत: ओईसीडी TiVA डाटाबेस, 2018

[1]भारत के अलावा अन्य 20 अर्थव्यवस्थाएं जिन्हें जीवीसी में सहभागिता के अनुसार क्रमबद्ध किया गया है, जो फॉरवर्ड एवं बैकवार्ड लिंकेज का योग हैं। भारत को भी अलग से दिखाया गया है।

विदेशी बाजारों में घरेलू उत्पादन के लिए अंतिम मांग के पूर्ण अपस्ट्रीम प्रभाव को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, रासायनिक और दवा उद्योग को लीजिए। इस क्षेत्र में उच्च विदेशी मांग के चलते विदेशी अंतिम मांग में घरेलू मूल्ययोजित सामग्री 2005 के 32.6% से 6.2 प्रतिशत बढ़कर 2016 में 38.8% हो गई। अन्य के साथ–साथ वस्त्र, परिधान, चमड़ा और संबंधित उत्पाद (33.5%); 'रसायन और फार्मास्युटिकल उत्पाद' (38.8%), जैसे अन्य उद्योगों में भी विदेशी अंतिम मांग के चलते अच्छी स्थिति बनी हुई है। उल्लेखनीय है कि विनिर्माण निर्यातों में भारत के घरेलू मूल्य योजन का 26.9% हिस्सा विदेशी खपत से ही है।

उद्योगों द्वारा निर्यातों के घरेलू मूल्ययोजन के विश्लेषण से भी परिवर्तन का पता चलता है। प्राकृतिक संसाधनों, कृषि और खुदरा व्यापार से संबंधित उद्योगों का सकल निर्यात में उच्चतर घरेलू मूल्ययोजन है, जबकि विनिर्माण उद्योगों का सकल निर्यात में घरेलू मूल्ययोजन सामान्य रूप से कम ही है। जीवीसी में वृद्धिशील भागीदारी से निर्यातों में घरेलू मूल्य योजन में उल्लेखनीय गिरावट आती है, क्योंकि उस स्थिति में देश मध्यवर्ती वस्तुओं के व्यापार में अधिक सलंग्न रहते हैं। हालांकि, भारत के सकल निर्यातों का घरेलू मूल्ययोजन 2005 के 81.2% से बढ़कर 2016 में 83.9% हो गया है। यह भारत के निर्यातों में बढ़ते घरेलू मूल्ययोजन का संकेतक है। अन्य के साथ–साथ कोक और रिफाइंड पेट्रोलियम उत्पादों में (54.7% से 58.8%); 'कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक और ऑप्टिकल उत्पादों' में (64% से 67.8%); तथा 'परिवहन और भंडारण' में (80.6% से 86.2%) घरेलू मूल्य योजन में वृद्धि हुई है।

मूल्य श्रृंखलाओं में सेवाओं का महत्त्व

वस्तुओं के विशुद्ध उत्पादन के बजाय आज विनिर्माण अधिक हो रहा है। इसमें व्यावसायिक सेवाओं, लॉजिस्टिक्स, संचार सेवाएं, कंप्यूटिंग इत्यादि सेवाएं बढ़ रही हैं। इसके अलावा, सेवाएं डिजाइन विकास, मार्केटिंग आदि के माध्यम से उत्पादों में मूल्य योजन भी करती हैं और विनिर्माण में प्रतिस्पर्धिता सुनिश्चित करती हैं। भारत के लिए 2016 में सकल निर्यातों (माल और सेवा दोनों) में विदेशी सेवाओं का मूल्य योजन (एफएसवीए) का हिस्सा जहां 5.7% था, वहीं, इसी वर्ष सकल निर्यातों में घरेलू सेवाओं का मूल्य योजन (डीएसवीए) का हिस्सा 46.4% रहा।

विनिर्माण प्रतिस्पर्धिता के लिए सेवा क्षेत्र बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसलिए जीवीसी में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 2016 में विनिर्माण निर्यातों में सेवा क्षेत्र का योगदान 25.1% रहा (17.9% और विदेशी 7.2%) रहा, जिसमें विनिर्माण क्षेत्र के अंतर्गत मूल धातु और फैब्रिकेटेड धातु उत्पादों के लिए सेवाओं का 30.9% का अधिकतम योगदान रहा। वस्तुतः विनिर्माण निर्यातों में डीएसवीए का हिस्सा 2005 के 16% से बढ़कर 2016 में 17.9% हो गया। जबकि इसी अवधि के दौरान, एफएसवीए का हिस्सा लगभग एक समान (2005 में 7.4% और 2016 में 7.2%) बना रहा। उल्लेखनीय है कि लक्ज़मबर्ग, माल्टा, आयरलैंड, वियतनाम और हंगरी के निर्यातों में एफएसवीए सामग्री का उच्च हिस्सा है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी जैसी अर्थव्यवस्थाओं के निर्यातों में डीएसवीए का उच्चतर हिस्सा है।

आगे की राह

विभिन्न विकासक्षम रणनीतियां भारत को जीवीसी में अपनी भागीदारी बढ़ाने में मदद कर सकती हैं जिससे वैश्विक उत्पादन नेटवर्क में देश की उपस्थिति बढ़ सकती है। भारत तकनीकी उन्नयन, व्यापार समझौते, सेवा क्षेत्र पर फोकस, एफडीआई आकर्षित करने और बुनियादी ढांचे पर ध्यान केंद्रित करने जैसी रणनीतियों पर फोकस कर सकता है। ■

व्यापार में मंदी के बीच भारत के निर्यातों में वृद्धि का उपाय है परियोजना निर्यात

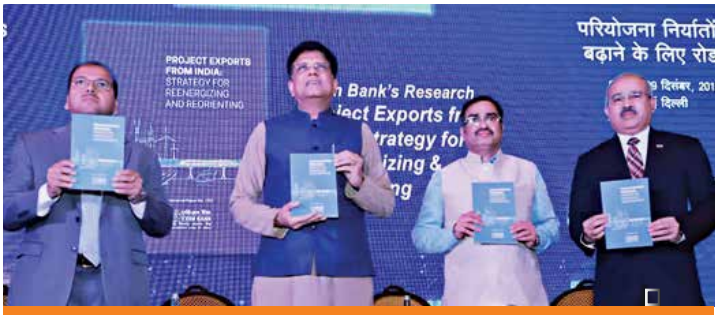

एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन 'भारत से परियोजना निर्यातः प्रोत्साहन और संवर्द्धन के लिए रणनीति' का विमोचन माननीय वाणिज्य और उद्योगमंत्री, भारत सरकार, श्री पीयूष गोयल द्वारा किया गया। इसका विमोचन नई दिल्ली में बैंक द्वारा 8-9 दिसंबर, 2019 को 'परियोजना निर्यातोंको बढ़ाने के लिए रोड मैप' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के दौरान किया गया।

ऐसा परिवेश जहां वैश्विक स्तर पर अनिश्चितताओं और अस्थिरता के बादल मंडरा रहे हैं, जोखिम और चुनौतियां अर्थव्यवस्थाओं के सामने मुंह बाए खड़े हैं, आर्थिक वैश्वीकरण को उल्लेखनीय रूप से विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे बहुपक्षीय वाद और मुक्त व्यापार खतरे में हैं। ऐसे में यह हैरानी की बात नहीं है बढ़ती आर्थिक अनिश्चितताओं के कारण मांग में वैश्विक गिरावट आने के कारण हालिया दौर में भारत से निर्यात वृद्धि धीमी पड़ गई है। अप्रैल-जनवरी 2019-20 के दौरान पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में भारत से मर्चेंडाइज निर्यातों में 2.4% की कमी आई है। व्यापार तनावों के बढ़ने और वैश्विक मंदी से जुड़े जोखिमों और चुनौतियों से निपटने के लिए इस स्थिति को बदलने और भरोसा बढ़ाने पर जोर देने की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता है।

वैश्विक मर्चेंडाइज निर्यातों में मंदी के बावजूद, परियोजना निर्यातों को बढ़ाते हुए देश के भुगतान संतुलन की स्थिति को कुछ मजबूत किया जा सकता है। चूंकि परियोजना निर्यात आय एक से पांच वर्ष की अवधि के लिए होती है, इसलिए परियोजना निर्यात देश की निर्यात आय में स्थिरता लाते हैं। परियोजना निर्यात न केवल देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं, बल्कि उच्च मूल्यवर्धित माल एवं सेवाओं के निर्यात, दूसरे देशों के साथ नई तकनीक के हस्तांतरण कार्मिकों के प्रशिक्षण और परिणामतः देश में उच्च कौशल वाले रोजगारों के सृजन के जरिए अर्थव्यवस्था में वृद्धि को बढ़ावा देते हैं।

हालिया वर्षों में भारतीय परियोजना निर्यातों का निष्पादन

भारतीय परियोजना निर्यातकों ने तमाम प्रमुख क्षेत्रों में विदेशी बाजारों में अवसरों के दोहन में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिससे राजकोष को काफी सहयोग मिला है। परियोजना निर्यात संवर्धन परिषद के आंकड़ों के अनुसार, भारत से परियोजना निर्यात 2016-17 के दौरान 8.2 बिलियन यूएस डॉलर पर पहुंच गया और वर्ष के दौरान भारत से कुल निर्यात (मर्चेंडाइज और सेवाओं को मिलाकर) का लगभग 1.9% रहा। परियोजना निर्यात संवर्धन परिषद द्वारा जुटाए गए डेटा के साथ, एक्ज़िम बैंक ने भारत में चुनिंदा परियोजना निर्यातकों का एक सर्वे किया। इस सर्वे के निष्कर्षों से पता चला कि वित्तीय वर्ष 2016 से 2018 के दौरान, कंपनियों ने लगभग 17.7 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य के कॉन्ट्रैक्ट हासिल किए।

इसके अलावा,विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक (एडीबी)और अफ्रीकी विकास बैंक (एएफडीबी) जैसे बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी) के आंकड़ों से पता चलता है कि बहुपक्षीय विकास बैंकों द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं, विशेष रूप से इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों की भागीदारी में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2014-2018 के दौरान, भारतीय कंपनियों ने एडीबी, एएफडीबी तथा विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं में 21.0 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य के कॉन्ट्रैक्ट हासिल किए हैं।

आस्थगित ऋण शर्तों पर इंजीनियरिंग माल की आपूर्ति को परियोजना निर्यातों के रूप में भी संदर्भित किया जाता है। भारत से इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्यात देश के कुल मर्चेंडाइज निर्यात का लगभग एक-चौथाई है और भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 3% है। वर्ष 2018-19 में रिकॉर्ड 81 बिलियन यूएस डॉलर के निर्यातों के साथ 2011-12 से 2018-19 के दौरान, भारत से इंजीनियरिंग निर्यातों में 4.2% की सीएजीआर दर्ज की गई।

एक्ज़िम बैंक के अध्ययन के अनुसार,बिजली क्षेत्र भारत से परियोजना निर्यात के लिए शीर्ष क्षेत्र के रूप में उभरा है, जिसमें कंपनियां बिजली ट्रांसमिशन और वितरण के क्षेत्र में कई कॉन्ट्रैक्ट हासिल कर रही हैं। एक्ज़िम बैंक के सर्वे के अनुसार, मूल्य की दृष्टि से, उक्त अवधि के दौरान भारतीय कंपनियों हासिल किए गए कॉन्ट्रैक्ट में से लगभग 48% बिजली क्षेत्र से रहे। अक्षय ऊर्जा (11%), परिवहन (10%), रेलवे (10%)और अन्य निर्माण (9%), देश से परियोजना निर्यात के लिए अन्य प्रमुख क्षेत्र रहे। बहुपक्षीय विकास बैंकों द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं में भी भारतीय कंपनियों ने भागीदारी करते हुए विशेष रूप से ऊर्जा, परिवहन और जल और स्वच्छता जैसे क्षेत्रों में ही अधिकांश कॉन्ट्रैक्ट हासिल किए।

किफायती लागत, तकनीकी विशेषज्ञता और गुणवत्ता वाले उत्पादों और सेवाओं की समय पर डिलीवरी की दृष्टि से परियोजनाओं के संतोषजनक निष्पादन से भारत के परियोजना निर्यातकों ने अच्छी ख्याति अर्जित की है और भारत की ब्रांड छवि को एक विश्वसनीय तथा उच्च गुणवत्ता वाले परियोजना निर्यातक देश के रूप में विकसित करने में मदद की है। इसके परिणामस्वरूप, भारतीय परियोजना निर्यातकों ने कई देशों के बाजारों में अपनी पैठ बनाई है, तथापि मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका और उप-सहारीय अफ्रीका भारतीय परियोजना निर्यातकों के लिए प्रमुख बाजार बने हुए हैं।

एक्ज़िम बैंक के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि चीन, तुर्की और दक्षिण कोरिया भारतीय परियोजना निर्यातकों के लिए शीर्ष प्रतिस्पर्धी हैं। इस अध्ययन के विश्लेषण में यह देखा गया है कि भारत और इसके प्रतिस्पर्धियों के बीच अच्छा सरकारी सहयोग, निर्यात ऋण एजेंसियों का सुदृढ़ फ्रेमवर्क तथा तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने जैसी कुछ समानताएं हैं।

सस्ते कच्चे माल जैसे कुछ क्षेत्रों के चलते चीन जैसे देश भारतीय कंपनियों की तुलना में लाभ की स्थिति में हैं। वहीं दूसरी ओर, भारत की मानव संसाधन क्षमताओं को भारतीय परियोजना निर्यातकों द्वारा एक प्रमुख मजबूती के रूप में देखा जाता है।

चुनौतियाँ

एक्ज़िम बैंक के सर्वे में भारतीय परियोजना निर्यातकों को विदेशी परियोजनाओं के निष्पादन में सामने आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियों को भी चिह्नित किया गया है। इनमें से कुछ प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार हैं: परियोजना लगाए जाने वाले देशों में उच्च राजनीतिक और व्यावसायिक जोखिम; संस्थागत देरी, भूमि अधिग्रहण, आयोजना और अनुमोदन में देरी, धीमी निर्णय प्रक्रिया;परियोजनाओं में विशेष रूप से नकदी प्रवाह संबंधी आर्थिक बाधाएं, भुगतान में देरी, ऋण की अनुपलब्धता तथा कुशल और सस्ते श्रम की सीमित उपलब्धता और न्यून उत्पादकता।

साथ भारतीय परियोजना निर्यातों के लिए अन्य बातों के साथ-साथ कुछ और महत्त्वपूर्ण चुनौतियों में अफ्रीका, दक्षिण एशिया और मध्य पूर्व के अलावा अन्य देशों में सीमित परियोजना बाजार;यूरोप जैसे कुछ क्षेत्रों में बिड लगाने के अनुपात में कम कॉन्ट्रैक्ट मिलना; और बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के वित्तपोषण में एक बड़े अंतर जैसी चुनौतियां शामिल हैं, जिससे परियोजना अवसर कम हो जाते हैं। उच्च प्रतिस्पर्धा, जोखिम वहन क्षमता का अभाव और कुछ बहुपक्षीय विकास बैंकों में सदस्यता के न होने जैसे मसलों के साथ-साथ लंबे समय से चली आ रही ये समस्याएं इन क्षेत्रों में अदोहित क्षमताओं को भुनाने में भारतीय परियोजना निर्यातकों के लिए बड़ी चुनौतियां बन जाती हैं।

आगे की राह

परियोजना निर्यातों में भारत की स्पर्धात्मका बनी रहे, इसके लिए इन चुनौतियों का समाधान करने और घरेलू नीतिगत परिवेश को अनुकूल बनाने पर निर्भर करता है। विशेष रूप से उन बातों का ध्यान रखते हुए, जिनके चलते भारतीय कंपनियों को दूसरे ऐसे देशों से कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जिनके नीतिगत और वित्तीय प्रोत्साहन से उन देशों की कंपनियों को लाभ मिलता है।

इसके अलावा, उन क्षेत्रों में क्षमताओं को विकसित करने की आवश्यकता है जहां चीन जैसे शीर्ष प्रतिस्पर्धियों की तुलना में भारतीय कंपनियों की सफलता सीमित रही है। परियोजना निर्यात के लिए बाजारों में विविधता लाने की भी आवश्यकता है। साथ ही लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई क्षेत्र, पूर्वी एशिया तथा प्रशांत और मध्य एशिया जैसे क्षेत्रों को लक्षित करने की जरूरत है, जो अपेक्षाकृत अल्प दोहित हैं।

वैश्विक स्तर पर, परियोजना निर्यातों को बढ़ावा देने में सरकार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और निर्यात ऋण एजेंसियां प्रोत्साहन कार्यक्रमों की एक प्रमुख कड़ी हैं। इसलिए, भारत में इन एजेंसियों से सहयोग व्यवस्था को सुदृढ़ करना देश से परियोजना निर्यातों को बढ़ाने के लिए बहुत जरूरी है। यद्यपि चीन, दक्षिण कोरिया और तुर्की जैसे प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में भारत में यह व्यवस्था काफी व्यापक है, तथापि विनियामकीय नरमी के साथ-साथ पूंजीगत संसाधनों जैसे मामले में स्थिति को मजबूत करने की आवश्यकता है।

इनके अलावा, मुक्त व्यापार समझौता/क्षेत्रीय व्यापार समझौता (एफटीए/आरटीए) वार्ताओं में परियोजना निर्यातों को शामिल करने पर विचार करने; डेटा संबंधी समस्याओं के समाधान; अल्प दोहित देशों में बाजार तक बेहतर पहुंच के लिए अंतर-अमेरिकी विकास बैंक (आईडीबी) जैसे क्षेत्रीय बहुपक्षीय विकास बैंकों की सदस्यता लेना और प्रोक्योरमेंट अवसरों के बारे में जानकारी का प्रसार करने जैसे अन्य क्षेत्रों में व्यापक रूप से गतिविधियां बढ़ाने की जरूरत है।

परियोजना निर्यातकों को आगामी परियोजना अवसरों का दोहन करने के लिए पहल करने की भी आवश्यकता है। परियोजना निर्यातकों को इस संबंध में निम्नलिखित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है:

- कंसोर्शियम दृष्टिकोण: भारतीय कॉन्ट्रैक्टरों को परियोजनाओं की बोली और निष्पादन के लिए एक कंसोर्शियम दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यहां तक कि किसी एक सेक्टर में कंसोर्शियम से निर्यातक अपनी-अपनी क्षमताओं का सामूहिक रूप से लाभ उठा सकते हैं और इससे उन्हें बड़े मूल्य के कॉन्ट्रैक्ट के लिए भी बोली लगाने में मदद मिल सकती है।

- संयुक्त उद्यम के माध्यम से स्थानीय स्तर पर उपस्थिति: किसी देश में स्थानीय उपस्थिति से परियोजना के लिए कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने में सफलता मिलने की संभावना काफी बढ़ जाती है।स्थानीय उपस्थिति से कॉन्ट्रैक्टरों को बाजार की प्रमुख कंपनियों से चर्चा करने और अपनी प्रतिस्पर्धी स्थिति का प्रारंभिक चरण में ही मूल्यांकन करने में मदद मिलती है। इसलिए जिस देश में परियोजना लगाई जानी है, वहां प्रमुख बाजारों में परियोजना निर्यातक संयुक्त उद्यमों पर विचार कर सकते हैं।

- सब-कॉन्ट्रैक्ट कॉन्ट्रैक्ट: छोटे और मध्यम आकार की कंपनियां प्रमुख रूप से यूरोपीय / अमेरिकी / जापानी कंपनियों से उप-संविदा (सब-कॉन्ट्रैक्ट) हासिल कर परियोजना निर्यातों में शामिल हो सकती हैं। इन सब कॉन्ट्रैक्ट अवसरों के जरिए अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं का अनुभव कंपनियों को क्षमताएं विकसित करने और आने वाले समय में स्वतंत्र रूप से बोली लगाने में मददगार हो सकता है।

अधिकांश विकासशील देशों में इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं बढ़ने और बहुपक्षीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में अपने निवेश बढ़ाने से परियोजना निर्यातों में बड़े पैमाने पर अवसर हैं और निरंतर बढ़ रहे हैं। भारतीय निर्यातक इन अवसरों का लाभ उठा सकते हैं क्योंकि उन्होंने इस क्षेत्र में पहले से ही पर्याप्त प्रतिस्पर्धा विकसित कर ली है। निर्यात मूल्य श्रृंखला में भारतीय अर्थव्यवस्था को उच्चतर स्थिति में लाने की दृष्टि से और 2024-25 तक 1 ट्रिलियन यूएस डॉलर के निर्यातों के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य को पूरा करने के लिए परियोजना निर्यातों में क्षमता विकास की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। ■

भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र

प्रस्तावना

रोजगार के साथ-साथ राजस्व की दृष्टि से भी स्वास्थ्य सेवा (हेल्थकेयर) क्षेत्र भारत के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्र में अस्पताल, फार्मास्यूटिकल्स, बायोफार्मास्यूटिकल्स, जांच केंद्र, चिकित्सा उपकरण और चिकित्सा पर्यटन आदि शामिल हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता एवं पहुंच के मामले में 195 देशों में भारत का 145वां स्थान है। भारत के लिए हेल्थकेयर एक्सेस एंड क्वालिटी (एचएक्यू) सूचकांक 1990 में 24.7 था, जो 2016 में बढ़कर 41.2 हो गया, तथापि यह वैश्विक औसत 54.4 से नीचे है। भारतीय स्वास्थ्य सेवा उद्योग का कारोबार 2016 में लगभग 150 बिलियन यूएस डॉलर का था, जिसके 2020 तक 280 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंचने की संभावना है।[1]

स्वास्थ्य क्षेत्र में वृद्धि के रुझान
(बिलियन यूएस डॉलर)

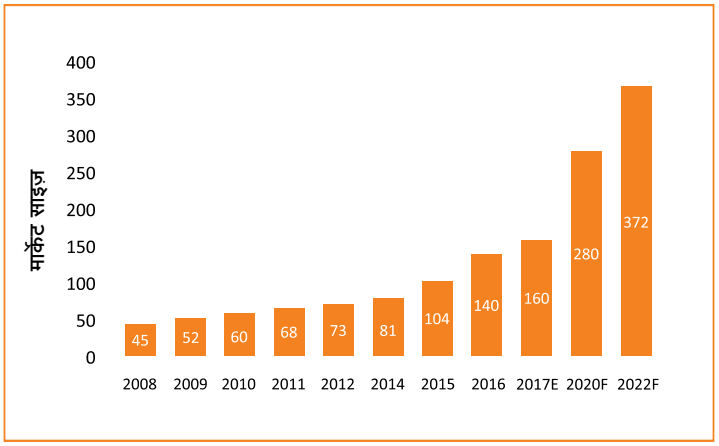

नोट: E-संभावित, F - पूर्वानुमान
स्रोत: आईबीईएफ

उप क्षेत्रों में वृद्धि

भारत में अस्पताल उद्योग के वित्तीय वर्ष 2019 में 3.8 ट्रिलियन की तुलना में वित्तीय वर्ष 2024 तक 15-16% की सीएजीआर से वृद्धि करते हुए 7.8 ट्रिलियन तक पहुंचने की उम्मीद हैं। 2 टियर II और टियर III श्रेणी के शहरों में संगठनात्मक विकास तथा विस्तार एवं 'आयुष्मान भारत' जैसी सरकारी नीतियों से इस वृद्धि में गति आने की उम्मीद है। भारत में फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र 2017 में 33 बिलियन यूएस डॉलर का था। घरेलू फार्मास्यूटिकल्स बाजार का टर्नओवर 2017 में 1,16,389 करोड़ (17.87 बिलियन यूएस डॉलर) की तुलना में 9.4% की वर्ष-दर-वर्ष दर वृद्धि से 2018 में 1,29,015 करोड़ (18.12 बिलियन यूएस डॉलर) तक पहुंच गया।

भारतीय फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र में जेनरिक दवाओं की हिस्सेदारी सबसे ज्यादा यानी 71% तक है। वार्षिक टर्नओवर के आधार पर, 2018 में भारतीय फार्मास्यूटिकल्स बाजार में संक्रमण रोधी (13.6%), हृदय संबंधी (12.4%) और जठरांत्रीय (11.5%) का सबसे अधिक हिस्सा रहा। भारतीय बायोफार्मास्यूटिकल्स में अगले पांच वर्षों में 17-18% की सीएजीआर से वृद्धि होने की उम्मीद है। इसी तरह के जैव उत्पादों के लॉन्च से फार्मास्यूटिकल्स बाजार के 2024 तक 400-420 बिलियन तक का हो जाने की संभावना है। भारत में चिकित्सा उपकरण उद्योग 2017 के दौरान लगभग 11 बिलियन यूएस डॉलर अनुमानित था, जिसमें प्रतिवर्ष 28% की वृद्धि के साथ इसके 2025 तक 50 बिलियन यूएस डॉलर तक का हो जाने की संभावना है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई)

भारत के अस्पतालों में ऑटोमैटिक रूट के तहत जनवरी 2000 से ही 100% एफडीआई की मंजूरी दी गई है। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के उभरते हुए घटकों में से एक बीमा क्षेत्र में 49% तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी जाती है। 26% तक के निवेश को ऑटोमैटिक रूट के तहत रखा गया है तथा 26% से 49% तक के एफडीआई के लिए सरकार से पूर्व अनुमोदन लेना जरूरी है। अप्रैल 2000 से मार्च 2019 के दौरान दवाओं एवं फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र में एफडीआई आवक 15.98 बिलियन यूएस डॉलर की रही। इस अवधि के दौरान अस्पतालों, स्वास्थ्य जांच केंद्रों तथा चिकित्सा उपकरणों जैसे क्षेत्रों में एफडीआई आवक क्रमशः 6.09 बिलियन यूएस डॉलर तथा 1.82 बिलियन यूएस डॉलर रही।

अवसर

बढ़ती जनसंख्या, बदलती जीवन शैली और आय में वृद्धि होने से स्वास्थ्य देखभाल पर प्रति व्यक्ति खर्च बढ़ने की उम्मीद है। स्वास्थ्य सेवाओं की बढ़ती लागत और नई-नई बीमारियों तथा न्यून सरकारी फंडिंग के चलते स्वास्थ्य बीमा कवरेज की मांग बढ़ रही है।

विश्व स्तर के अस्पताल एवं कुशल चिकित्सक होने के कारण भारत चिकित्सा पर्यटन के लिए प्रमुख स्थान है। स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं की बढ़ती मांग के कारण इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश बढ़ने की काफी संभावना है, जिससे स्वास्थ्य सेवा इन्फ्रास्ट्रक्चर में काफी अवसर हैं। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में 2025 तक 58,000 रोजगार के अवसर सृजित होने की उम्मीद है और 2024 तक चिकित्सा इन्फ्रास्ट्रक्चर पर 200 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक खर्च किए जाने की संभावना है।

मौजूदा कोरोनोवायरस के प्रकोप के चलते भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के समक्ष चुनौतियां बढ़ रही हैं। चीन से आपूर्ति की कमी के कारण फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र इस प्रकोप से प्रभावित होने वाला पहला प्रमुख क्षेत्र है। चीन भारतीय फार्मास्यूटिकल्स उद्योग के लिए दवा सामग्री का प्रमुख स्रोत है। भारत में फैले नोवल कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण से दवा, जांच उपकरण और अस्पतालों में इंफ्रास्ट्रक्चर को भी बढ़ाने की जरूरत है। आपूर्ति की कमी के कारण इन आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु मांग काफी बढ़ सकती है, जिसके परिणामस्वरूप अल्पावधि में खरीद और मूल्य निर्धारण के संबंध में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के समक्ष बहुत अधिक चुनौतियां हैं। ■

[2]FICCI-KPMG Report [3]CRISIL Research
[4]Invest India – National Investment Promotion & Facilitation Agency
[5]Healthcare Industry Report, IBEF

बजट 2020

केंद्रीय बजट 2020–21 की थीम में दूरगामी सुधारों की एक श्रृंखला मिल है, जिसका उद्देश्य अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक उपायों के जरिए भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना है।

व्यापक आर्थिक मोर्चे पर देखा जाए तो सरकार ने वित्तीय वर्ष 2020 के राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी का 3.1% रखा था, जिसे बाद में संशोधित कर 3.8% कर दिया गया और वित्तीय वर्ष 2021 के लिए यह लक्ष्य 3.5% तक रखा गया है। सेक्टर–वार आवंटन के नजरिए से देखा जाए तो, तालिका 1 में दर्शाए गए अनुसार, एक तरफ जहां कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में वर्ष–दर–वर्ष गिरावट दर्ज की गई है, वहीं शिक्षा,स्वास्थ्य,परिवहन अवसंरचना और कृषि ऋण के क्षेत्र में वृद्धि दर्ज की गई है।

तालिका 1: चुनिंदा क्षेत्रों के लिए बजट आवंटन में परिवर्तन

बजट के अंतर्गत व्यापक क्षेत्र वर्गीकरण	आवंटन में वर्ष–दर–वर्ष परिवर्तन का %
कृषि	–8.6%
ग्रामीण विकास	–12%
कृषि ऋण लक्ष्य	+15%
शिक्षा	+4.7%
स्वास्थ्य सेवा	+7%
परिवहन	+8%

बजट में 16 कार्य प्रस्तावों के जरिए कृषि, सिंचाई और ग्रामीण विकास पर विशेष जोर दिया गया है। कृषिक्षेत्र के लिए आवंटन में 1.6 लाख करोड़ तक की बढ़ोतरी की गई है, इस प्रयास से कृषि क्षेत्र में सुधार लाने की मंशा साफ देखी जा सकती है। इसके अलावा, 2020–21 के लिए 15 लाख करोड़ के कृषि ऋण लक्ष्य की पहल करने के साथ–साथ; जल्दी खराब हो जाने वाली खाद्य सामग्री की देशभर में निर्बाध आपूर्ति श्रृंखला बनाने के लिए योजनाएं बनाई गई हैं; और 20 लाख किसानों को एकल सौर परियोजना करने में सहायता देने के उद्देश्य से पीएम–कुसुम योजना का विस्तार किया गया है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में, बजट में गरीबों के लिए प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत 20,000 से अधिक अस्पतालों को सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव रखा गया; और सभी जिलों में वर्ष 2024 तक जन औषधि केंद्र योजना शुरू कर 2000 दवाएं और 300 सर्जरी संबंधी सामान मुहैया कराने का प्रस्ताव रखा गया है।

अवसंरचना क्षेत्र को काफी बढ़ावा मिला है, जिसमें 2024 तक उड़ान योजना को फलीभूत करने के लिए 100 से अधिक हवाई अड्डे बनाए जाने; और पीपीपी मॉडल पर 150 यात्री ट्रेनों का संचालन किया जाना प्रस्तावित है। सबसे महत्त्वपूर्ण घोषणाओं में से एक उल्लेखनीय घोषणा यह रही कि राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन में अगले पांच वर्षों के लिए 100 लाख करोड़ का निवेश किया जाएगा, जिसमें सभी क्षेत्रों की लगभग 6500 से अधिक परियोजनाएं शामिल हैं और उन्हें उनके आकार और विकास की स्थिति के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। अवसंरचना पाइप लाइन को बढ़ावा देने के लिए कुल 22,000 करोड़ पहले ही प्रदान किए जा चुके हैं, इस योजना का उद्देश्य राजमार्गों का यथा शीघ्र विकास करना है। इसमें 2500 किलोमीटर के एक्सेस कंट्रोल हाईवे, 9000 किमी के आर्थिक गलियारे, 2000 किमी के कोस्टल और लैंडपोर्ट रोड और 2000 किमी के स्ट्रैटेजिक हाईवे का विकास करना शामिल होगा। दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेस–वे और दो अन्य पैकेजों के 2023 तक पूरा हो जाने की उम्मीद है और अब चेन्नई–बेंगलुरु एक्सप्रेस–वेपर भी काम शुरू किया जाएगा। 2024 से पहले 6000 किमी से अधिक राजमार्गों में से कम से कम 12 लॉट का मुद्रीकरण करने का प्रस्ताव है।

'नई अर्थव्यवस्था' की अवधारणा की शुरुआत करते हुए, देश भर मेंडेटा सेंटर पार्क बनाने के लिए निजी क्षेत्र को सक्षम बनाने के उद्देश्य से केंद्रीय बजट में एक नीति बनाई गई है। भारत ने टके माध्यम से फाइबर टू द होम (FTTH) कनेक्शन के जरिए इस साल 100,000 ग्राम पंचायतों को जोड़ा जाएगा। वित्तीय वर्ष 2021 में भारतनेट कार्यक्रम 6000 करोड़ प्रदान करने का प्रस्ताव है। डिजिटल प्लेटफॉर्म सहित नवोद्यमों को लाभ पहुंचाने के लिए प्रस्तावित उपायों में निर्बाध अनुप्रयोग और आईपीआर को कैप्चर करने के लिए, नए और उभरते क्षेत्रों सहित विभिन्न प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में नॉलेज ट्रांसलेशन क्लस्टर स्थापित करने जैसे उपाय प्रस्तावित हैं।

वित्तीय क्षेत्र के संबंधमें, यह नोट किया गया कि भारत सरकार ने विनियामकीय और वृद्धि प्रयोजनों के लिए पिछले कुछ वर्षों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में लगभग 3,50,000 करोड़ की पूंजी लगाई है। इन बैंकों में प्रशासन संबंधी सुधार किए जाएंगे, ताकि वे और अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकें। सरकार ने पहले ही 10 बैंकों का विलय कर चार बड़े बैंक बनाने की मंजूरी दे दी है। इसके अलावा, निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी) को एक जमाकर्ता के लिए निक्षेप बीमा कवरेज बढ़ाने की अनुमति दे दी गई है, यह राशि अब 1 लाख से बढ़ाकर 5 लाख प्रति जमाकर्ता कर दी गई है।

निजी पूंजी की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए, आईडीबीआई बैंक में भारत सरकार की शेष जमा पूंजी को शेयर बाजार के माध्यम से निजी, खुदरा और संस्थागत निवेशकों को बेचने का प्रस्ताव रखा गया है। नौकरी में रहते हुए स्थान आसानी से बदलने के लिए, हमें स्वतः नामांकन के साथ यूनिवर्सल पेंशन कवरेज दे देना चाहिए। पिछले वर्ष भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अनुमत ऋण की पुनर्संरचना से पांच लाख से अधिक सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को लाभ हुआ है। फार्मास्यूटिकल, ऑटोमोबाइल कंपोनेंट और इसी तरह के कई अन्य चुनिंदा क्षेत्रों में तकनीकी उन्नयन, अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी), व्यापार रणनीति आदि को बढ़ावा देने के लिए हैंडहोलिंग सहायता देने का प्रस्ताव है। इसके लिए एक्ज़िम बैंक द्वारा सिडबी के साथ मिलकर 1000 करोड़ की एक योजना चलाई जाएगी।

अंत में, व्यक्तिगत कर दाताओं को बड़ी राहत देने और आयकर कानून को सरल बनाने के लिए, माननीय वित्तमंत्री ने एक नई और सरल व्यक्तिगत आयकर व्यवस्था लाने का प्रस्ताव रखा है। इस में ऐसे व्यक्तिगत करदाताओं के लिए आयकर की दरों को काफी कम कर दिया जाएगा,जो पहले ही कुछ कटौतियां करा रहे हैं और वे छूटके हकदार हैं। ■

'कलमकारी' कला को एक्ज़िम बैंक की सहायता

भारत की परंपरागत कला और शिल्प को सहेजने और शिल्पकारों को स्थायी आजीविका प्रदान करने के दोहरे उद्देश्य से देशभर के ग्रासरूट उद्यमों और शिल्पकारों को उत्पाद एवं डिजाइन विकास और पैकेजिंग के प्रति जागरूक करने के लिए सहयोग प्रदान करता रहा है। बैंक अपने ग्रासरूट उद्यम विकास कार्यक्रम के जरिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन कर नई पीढ़ी के शिल्पकारों को अपनी परंपरागत शिल्प कलाओं को सीखने और व्यवसाय का मॉडल खड़ा करने के लिए प्रेरित करते हुए विभिन्न शिल्प कलाओं को भारत तथा विदेशों में अनेक मंचों पर पहचान दिलाने में सहयोग प्रदान करता है।

'कलमकारी'कला: संक्षिप्त परिचय

भारत में कलमकारी कला विगत 2000 वर्षों से (i) ब्लॉक–प्रिंट; और (ii) हस्तचित्रित दो विशिष्ट शैलियों में चली आ रही है। कलमकारी कला एक प्राचीन शैली है जो सूती (कोरा कपड़ा) या रेशम के कपड़े पर की जाती है। इसमें इमली की टहनी को कलम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है और प्राकृतिक रंगों से चित्रकारी की जाती है। कलमकारी शब्द फारसी से लिया गया है जहाँ 'कलम' का अर्थ है कलम और 'कारी' का अर्थ शिल्प कौशल से है। इस कला में रंगाई, ब्लीचिंग, हैंड पेंटिंग, ब्लॉक प्रिंटिंग, स्टार्चिंग, और सफाई जैसे 23 चरण शामिल होते हैं और यह बहुत महीन काम होता है। कलमकारी में खींची जाने वाली आकृतियों में फूल, मोर, बेलबूटेदार से लेकर देवी देवताओं के चित्र तक शामिल होते हैं।

आंध्र प्रदेश इस प्राचीन कला के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। कलमकारी को दो रूप में पहचाना जा सकता है (i) चित्तूर जिले से श्री कालाहस्ती; और (ii) कृष्णा जिले की मछलीपट्टनम कलमकारी। मछलीपट्टनम कलमकारी में कपड़ों की रंगाई के लिए वनस्पति रंगों से ब्लॉक–पेंटिंग की जाती है जिसे आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में मछलीपट्टनम के पास पेडाना शहर में उत्पादित किया जाता है। आंध्र प्रदेश का यह डेल्टा तटीय क्षेत्र बेहतरीन निर्यात गुणवत्ता वाले कलमकारी प्रिंट के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। मछलीपट्टनम में लगभग 8000–10,000 कलमकारी बुनकर हैं, जो इस काम को कर रहे हैं, जो पीढ़ियों से उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत बना हुआ है।

एक्ज़िम बैंक ने मछलीपट्टनम, आंध्र प्रदेश के पास पेडाना गाँव में मैसर्स जाह्नवी कलमकारी से जुड़े 30 अनुभवी मास्टर बुनकरों के लिए दिसंबर 2019 में एक महीने के उत्पाद और डिज़ाइन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य डिजाइनों में सुधार करना, नवोन्मेषी डिजाइन अवधारणाओं और नई प्रौद्योगिकियों को अपनाना, उत्पाद विकास, गुणवत्ता उन्नयन और पैकेजिंग जैसे क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देना था। इससे कलमकारी कारीगरों की समझ बढ़ी और वे अपने उत्पादों की गुणवत्ता के प्रति अधिक सचेत हुए। बड़े संदर्भ में बात की जाए तो इन कारीगरों को अपनी आय बढ़ाने में भी मदद मिली। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले कारीगर इस रूप में भी लाभान्वित हुए कि उन्हें वैल्यू एडीशन के जरिए नए उत्पाद तैयार करने और उपयोगिता वाले तथा बाजार के रुझान वाले उत्पाद विकसित करते हुए घरेलू व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपने उत्पादों की मांग बढ़ाने में भी मदद मिली।

इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम कौशल विकास, उत्पाद विकास और निर्यात क्षमता सृजन में सहायता के जरिए विशेष रूप से हस्तशिल्प और हथकरघा क्षेत्र में ग्रासरूट उद्यमों को सहायता और उन्हें बढ़ावा देते हुए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासतको सहेजने के बैंक के उद्देश्य को पूरा करने में मदद करता है। ■

लकड़ी पर मोर और अन्य डिजाइनों वाले ब्लॉक प्रिंट

एक्ज़िम बैंक की ऋण–व्यवस्थाएँ

एक्ज़िम बैंक विदेशी वित्तीय संस्थाओं, क्षेत्रीय विकास बैंकों, संप्रभु सरकारों और अन्य विदेशी संस्थाओं को ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान करता है, जो उन देशों के क्रेताओं को भारत से आस्थगित भुगतान शर्तों पर विकासपरक तथा बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं, उपकरण, माल एवं सेवाओं का आयात करने में समर्थ बनाती हैं। एक्ज़िम बैंक भारत सरकार के आदेश पर भी ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान करता है। इनके अंतर्गत एक्ज़िम बैंक माल के शिपमेंट पर भारतीय निर्यातक को कॉन्ट्रैक्ट मूल्य के 100 प्रतिशत की प्रतिपूर्ति करता है, बशर्ते कि कुल कॉन्ट्रैक्ट मूल्य के कम से कम 75 प्रतिशत के माल एवं सेवाओं का शिपमेंट भारत से किया गया हो। ऋण–व्यवस्थाओं के जरिए उभरते बाजारों में भारत की परियोजना निष्पादन क्षमता के प्रदर्शन में भी मदद मिली है। हाल के वर्षों में ऋण–व्यवस्थाओं ने गति पकड़ी है। विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशियानिया और सीआईएस क्षेत्रों में सबसे ज्यादा ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की गई हैं। बैंक द्वारा अब तक अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशियानिया और सीआईएस क्षेत्रों के 61 देशों को 25.15 बिलियन यूएस डॉलर की ऋण प्रतिबद्धता के साथ 258 ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं, जो भारत से निर्यातों के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण–व्यवस्थाएं विकासशील देशों में भारत से परियोजनाओं, माल और सेवाओं के निर्यात के संवर्धन और सुगमीकरण के लिए प्रभावी साधन हैं।

एक्ज़िम बैंक ने जनवरी–मार्च 2020 के दौरान भारत सरकार की ओर से निम्नलिखित ऋण–व्यवस्था पर हस्ताक्षर किए:

सूरीनाम गणराज्य सरकार को 35.8 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण–व्यवस्था प्रदान की गई। यह ऋण–व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्रों में सोलर डीजी हाइब्रिड पीवी प्रणालियों के जरिए 50 सुदूर गांवों में बिजली पहुंचाने के लिए प्रदान की गई है। इसके साथ ही, एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से सूरीनाम सरकार को अब तक 124.98 मिलियन यूएस डॉलर की कुल नौ ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। ये ऋण–व्यवस्थाएं सूरीनाम सरकार को बिजली, जल आपूर्ति, हेलिकॉप्टरों की खरीद और दुग्ध उत्पादक संयंत्र के पुनरुद्धार और उन्नयन संबंधी परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

श्री सुदत्त मंडल
मुख्य महाप्रबंधक
भारतीय निर्यात–आयात बैंक
ऑफिस ब्लॉक, टावर–1, 7वीं मंज़िल, एड्जेसेंट रिंग रोड,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली –110023
फोन: (011) 24607700 • ई– मेल: eximloc@eximbankindia.in

दास्तान–ए–कामयाबी

तंज़ानिया में टबोरा, गुंगा और ज़ेगा शहरों के लिए लेक विक्टोरिया पाइपलाइन के विस्तार संबंधी परियोजना तंज़ानिया गणराज्य सरकार को प्रदत्त 268.35 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण–व्यवस्था के तहत वित्तपोषित है। इस परियोजना में तीन पैकेज शामिल हैं। एफकॉन्स–एसएमसी के संयुक्त उद्यम द्वारा निष्पादित 54.81 मिलियन यूएस डॉलर के कॉन्ट्रैक्ट की शुरुआत फरवरी 2020 से हो गई है। इस जल वितरण प्रणाली से इन क्षेत्रों में पानी की कमी को दूर किया जा सकेगा।

दास्तान–ए–कामयाबी तंज़ानिया

तिमाही गतिविधियां

भारतीय एक्ज़िम बैंक ने 1 बिलियन यूएस डॉलर का 10 वर्षीय बॉन्ड 3.25% प्रतिवर्ष कूपन दर पर जारी किया

भारतीय निर्यात–आयात बैंक ने 06 जनवरी, 2020 को 1 बिलियन यूएस डॉलर का 10 वर्षीय बॉन्ड सफलतापूर्वक जारी किया था। यह 144/ए रेग एस फॉर्मेट में बैंक का तीसरा ट्रांजैक्शन है।यह किसी भी भारतीय संस्था द्वारा 10 वर्षीय यूएस डॉलर बॉन्ड में सबसे कम कूपन दर पर जारी बॉन्ड है। निर्गम 2.7 गुना ज्यादा सबस्क्राइब हुआ और इसे 184 प्रतिष्ठित निवेशकों से कुल 2.7 बिलियन यूएस डॉलर का सब्स्क्रिप्शन मिला। इससे प्राप्त वित्त को बैंक द्वारा भारतीय परियोजनाओं, दीर्घावधि ऋण के जरिए विदेशी निवेशों और इसके ऋण–व्यवस्था पोर्टफोलियो के लिए उपयोग किया जाएगा।

यह ट्रांजैक्शन CT10+150 बीपीएस के उचित मूल्य पर रखा गया, जो CT10+175 बीपीएस के प्रारंभिक मूल्य के अंदर था, जो 25 बीपीएस की महत्त्वपूर्ण मूल्य टाइटनिंग और नए शून्यल निर्गम प्रीमियम को प्रदर्शित करता है। निर्गम को एशिया से 44%, यूएसए से 36% तथा यूरोप, मध्यर पूर्व एवं अफ्रीका से 20% सब्स्क्रिप्शन मिला। बॉन्ड निर्गम को प्रतिष्ठित निवेशक वर्ग से सब्स्क्रिप्शन मिला। बॉन्ड को 58% फंड मैनेजरों को, 18% बैंकों को, 13% बीमा और पेंशन फंड, 10% केन्द्रीय बैंकों/आधिकारिक संस्थूओं एवं 1% निजी बैंकों को वितरित किया गया।

एक्ज़िम बैंक ने अपने 1 बिलियन यूएस डॉलर के बॉन्ड के लिए 16 जनवरी, 2020 को बीएसई में लिस्टिंग की औपचारिकता पूरी की। इस संबंध में बेल रिंगिंग बैंक के प्रबंध निदेशक श्री डेविड रस्कीना और मुख्य महाप्रबंधक एवं मुख्य वित्तीय अधिकारी सुश्री हर्षा बंगारी द्वारा की गई। इस अवसर पर इंडिया इंटरनेशनल एक्सचेंज (इंडिया आईएनएक्स) के एमडी एवं सीईओ श्री वी. बालासुब्रमणियम उपस्थित रहे।

इस अवसर पर, एक्ज़िम बैंक के प्रबंध निदेशक श्री डेविड रस्कीना ने कहा कि हमने 1 बिलियन यूएस डॉलर का यह निर्गम सफलतापूर्वक जारी किया और यह इस फॉर्मेट में यह हमारा तीसरा ट्रांजैक्शन है। यह एक्ज़िम बैंक की ओर से की गई एक अच्छी डील है और अन्य भारतीय बॉन्ड इश्यूअर विदेशी मुद्रा बॉन्ड बाजार तक पहुंचने के लिए इससे प्रेरित हो सकते हैं। एक्ज़िम बैंक के सभी विदेशी मुद्रा बॉन्ड पहले से ही इंडिया आईएनएक्स में लिस्टेड हैं और हम गर्व से कह सकते हैं कि इन सब बॉन्ड के साथ भारतीय एक्ज़िम बैंक इंडिया आईएनएक्स में लिस्टेड सबसे बड़ा इश्यूअर है। एक्ज़िम बैंक अपने आगामी निर्गमों के लिए इंडिया आईएनएक्स के साथ अपने संबंधों को और सुदृढ़ बनाता रहेगा।

प्रो. हेलेन रे ने दिया एक्ज़िम बैंक का 35वां स्थापना दिवस वार्षिक व्याख्यान

मुद्राओं में डॉलर का वही स्थान है, जो भाषाओं में अंग्रेजी का है। लंदन बिज़नेस स्कूल में अर्थशास्त्र की लॉर्ड बागरी प्रोफेसर हेलेन रे ने भारतीय निर्यात–आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) के 35वें स्थापना दिवस वार्षिक व्याख्यान में यह बात कही। यह व्याख्यान मुंबई में 28 फरवरी, 2020 को आयोजित किया गया। उनके व्याख्यान का विषय था– वित्तीय वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार प्रो. हेलेन रे ने अपने व्याख्यान में इस बात को रेखांकित किया कि यूएस डॉलर प्रभुत्व वाली मुद्रा है। अंतरराष्ट्रीय कर्ज का लगभग 62.2, अंतरराष्ट्रीय ऋणों का 56.3 और विदेशी मुद्रा भंडार का 62.7 यूएस डॉलर में ही है। उन्होंने यह भी कहा कि व्यापार इन्वॉइस के मामले में भारत सबसे अधिक डॉलराइज देश है।

रे ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार, अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग और आस्ति बाजारों में डॉलर का प्रभुत्व आर्थिक झटकों और मैक्रोइकनॉमिक नीतियों के अंतरराष्ट्रीय ट्रांसमिशन को किस प्रकार प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वित्तीय लिंकेज काफी तेजी से बढ़े हैं। इससे दूसरे देशों पर नीतिगत उपायों का प्रभाव भी बढ़ा है। उन्होंने बताया कि डॉलर के प्रभुत्व वाली व्यवस्था में यूएस फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति किस प्रकार पूरे वैश्विक वित्तीय चक्र को प्रभावित करती है। और फिर किस तरह दूसरे देशों में वित्तीय संस्थाओं की बैलेंस शीट और उनकी जोखिम वहन क्षमता को प्रभावित भी करती है। ■

छठा एक्ज़िम बाज़ार

एक्ज़िम बाज़ार देश के विभिन्न हस्तशिल्प और हथकरघा कारीगरों को अपने उत्पादों की बिक्री तथा प्रदर्शनी के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह न सिर्फ बाजार में उनके एक्सपोजर को बढ़ाता है बल्कि संभावित थोक खरीदारों के साथ चर्चा–परिचर्चा को भी सुगम बनाता है।

छठे एक्ज़िम बाज़ार का आयोजन 24 – 26 जनवरी, 2020 के दौरान पुणे के डच पैलेस में हुआ। इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी में देश भर के पारंपरिक और सांस्कृतिक कला और शिल्प उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।

आंध्र प्रदेश, बिहार, दिल्ली, गुजरात, जम्मू–कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल सहित 17 से अधिक राज्यों की समृद्ध कलात्मक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हुए कुल 50 प्रतिभागियों ने अपने हस्त निर्मित पारंपरिक उत्पादों का प्रदर्शन किया। इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी में उच्च गुणवत्ता वाले दस्तकारी उत्पादन बड़ी मात्रा में शामिल रहे, जिनमें चमड़े की कठपुतली, मधुबनी, गोंड, फड़, पिछवाई पेंटिंग, और हस्त निर्मित कटलरी, तांबे की घंटियां, कच्छ की मिट्टी के बर्तन, ढोकरा, केला फाइबर, बिदरी धातु के बर्तन, काऊना, स्फटिक आभूषण, सांझी पेपर कटिंग पेंटिंग, टेराकोटा, वुडन हैंगिंग, सबाई घास के उत्पाद, शहद, जयपुरी आभूषण जैसे हस्तशिल्प, और तसर सिल्क, अजरख, कला कॉटन और ऊन, एप्लीक, बंधनी, पटोला, राबारी, चंदेरी, हिमरू, पैठणी, फुलकारी, लहरिया, बनारसी, कालीन, पैचवर्क वाली रजाई और कांथा जैसे हथकरघा उत्पाद शामिल रहे। इस कार्यक्रम ने दर्शकों को बड़ी संख्या में आकर्षित किया। कारीगर इस प्रदर्शनी के दौरान अच्छी बिक्री करने में सक्षम रहे, और इसके अलावा भविष्य के लिए कीमती थोक ऑर्डर के लिए कई कारीगरों के संपर्क भी बने।

डच पैलेस, पुणे में 24 – 26 जनवरी, 2020 के दौरान हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की अनूठी प्रदर्शनी

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें: grid@eximbankindia.in

एक्ज़िमिअस शिक्षण केंद्र की गतिविधियां

एक्ज़िम बैंक, भारत से परियोजना निर्यातों उपकरण, माल एवं सेवाओं के निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की सहायता से भारतीय विकास एवं आर्थिक सहायता योजना (आयडियाज़) के तहत विदेशी संप्रभु सरकारों/विदेशी संस्थाओं को ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान करता है। इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, एक्ज़िम बैंक ने भारत सरकार समर्थित 'एक्ज़िम बैंक की ऋण–व्यवस्थाओं में व्यापार के अवसर' विषय पर आधे दिन के सेमिनार आयोजित किए। इन सेमिनारों का आयोजन आयडियाज़ के दिशानिर्देशों, एम्पैनलमेंट, पूर्व–अर्हता प्रक्रिया, निविदा प्रक्रिया के विषय में जागरूक करने और इंजीनियरिंग, बुनियादी ढांचा, निर्माण, स्वास्थ्य, परिवहन, सौर ऊर्जा और सिंचाई व जल आपूर्ति क्षेत्र में ऋण–व्यवस्था प्रक्रिया तथा कॉन्ट्रैक्ट कवरेज, संवितरण और निगरानी जैसे विषयों पर निर्यातकों में जागरूकता बढ़ाने के लिए किया गया। ये सेमिनार कोच्चि, पुणे, कानपुर और भुवनेश्वर जैसे टियर– II शहरों में आयोजित किए गए और इनका उद्देश्य लघु मध्यम उद्योग निर्यातकों तक पहुंच बनाना था। इन सेमिनारों में प्रतिभागियों को बैंक और विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने संबोधित किया।

लघु उद्यमों, विशेष रूप से भारत के हस्तशिल्प कारीगरों की निर्यात क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य के साथ, हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के साथ मिलकर कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएं डिजाइन ट्रेंड्स, निर्यात दस्तावेजीकरण और निर्यात प्रक्रियाओं पर केंद्रित रहीं। तिमाही के दौरान, ये कार्यशालाएं कोयम्बटूर, मैंगलोर और मदुरै में आयोजित की गईं, और इन क्षेत्रोंके कारीगरों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया।

भारत–अफ्रीका संबंधों को लेकर वर्ष 2020 काफी खास रहने वाला है। एक तरफ जहाँ चौथे भारत–अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन का वर्ष है, वहीं भारत–अफ्रीका परियोजना साझेदारी पर 15 वां सीआईआई–एक्ज़िम बैंक कॉन्क्लेव भी इसी वर्ष हो रहा है, जो विदेश मंत्रालय और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के सहयोग से होगा। नीति संबंधी शाखा होने के नाते, एक्ज़िम बैंक ने जनवरी 2020 में नई दिल्ली में एक कार्यक्रम आयोजित किया और इस सेमिनार के माध्यम से भारत–अफ्रीका द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को प्रभावित करने वाले विषयों पर विभिन्न स्टेकहोल्डरों से उनकी प्रतिक्रिया मांगी। इस सेमिनार का विषय अफ्रीका में भारतीय व्यवसाय को बढ़ाना रहा। इस सेमिनार में विभिन्न स्टेकहोल्डरों अर्थात भारतीय कंपनियों, भारत में अफ्रीकी राजनयिक दूतावासों, व्यापार निकायों और भारत सरकार के प्रतिनिधियों द्वारा विचार–विमर्श किया गया। इन्होंने उद्योग के विविध क्षेत्रों के संबंध में अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान किए, ताकि भारत–अफ्रीका संबंधों को और सुदृढ़ किया जा सके।

एक्ज़िम बैंक ने अपने पांचवें वेबिनार, 'चुनिंदा क्षेत्रों पर केंद्रीय बजट के प्रभाव' विषय पर मास्टरक्लास का आयोजन किया। इसमें बैंक के अर्थशास्त्रियों ने फरवरी 2020 में पेश किए गए केंद्रीय बजट के विभिन्न क्षेत्रों, भारतीय अर्थव्यवस्था और व्यापार पर पड़ने वाले असर का मूल्यांकन किया।

हमारे आगामी कार्यक्रमों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया www.eximbankindia.in/upcoming-events पर लॉग ऑन करें।

एक्ज़िम बैंक का 35वां स्थापना दिवस वार्षिक व्याख्यान

एक्ज़िम बैंक द्वारा स्थापना दिवस वार्षिक व्याख्यानमाला की शुरुआत 1986 में बैंक के परिचालन शुरू होने के उपलक्ष्य में की गई थी। इस व्याख्यानमाला के अंतर्गत हर वर्ष एक ख्यातिलब्ध विशेषज्ञ, विचारक को भारतीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डालने वाले समसामयिक विषयों पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इस वार्षिक व्याख्यान माला का उद्देश्य विचारकों और प्रबुद्धजनों के बीच वैश्वीकरण पर जारी विचार–विमर्श को आगे बढ़ाना और इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान देना है।

अंकटाड के महा सचिव श्री सुपाचई पानिचपाकडी; विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री और उपाध्यक्ष प्रोय निकोलस स्टर्न; लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स के प्रोफेसर लॉर्ड मेघनाद देसाई; न्यूजीलैंड के माननीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री जेम्स ब्लॉगर; यूएनडीपी के पूर्व एडमिनिस्ट्रेटर डॉ. केमल डर्विस; कोलंबिया यूनिवर्सिटी में इकनॉमिक्स और लॉ के प्रोफेसर जगदीश भगवती; चाइना सोसायटी ऑफ वर्ल्ड इकनॉमिक्स के अध्यक्ष प्रो. यू योंगदिंग; अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के पूर्व प्रथम उप प्रबंध निदेशक डॉ. जॉन लिप्स्की; अफ्रीकी विकास बैंक के पूर्व अध्यक्ष डॉ. डोनाल्ड कबेरुका, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की मुख्य अर्थशास्त्री प्रो. गीता गोपीनाथ और नोबेल पुरस्कार विजेता तथा मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में फोर्ड फाउंडेशन इंटरनेशनल प्रोफेसर अभिजीत बनर्जी जैसी हस्तियां बीते कुछ वर्षों में इस व्याख्यान के वक्ता रह चुके हैं।

लंदन बिजनेस स्कूल में अर्थशास्त्र की लॉर्ड बागरी प्रोफेसर हेलेन रे ने 28 फरवरी, 2020 को मुंबई में भारतीय निर्यात–आयात बैंक का 35वां स्थापना दिवस वार्षिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। हेलेन रे लंदन बिजनेस स्कूल में अर्थशास्त्र की लॉर्ड बागरी प्रोफेसर हैं। उनके व्याख्यान का विषय था– वित्तीय वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार। रे ने अपने व्याख्यान में इस बात को रेखांकित किया कि यूएस डॉलर प्रभुत्व वाली मुद्रा है। अंतरराष्ट्रीय कर्ज का लगभग 62.2 प्रतिशत, अंतरराष्ट्रीय ऋणों का 56.3 प्रतिशत और विदेशी मुद्रा भंडार का 62.7 प्रतिशत यूएस डॉलर में ही है। उन्होंने यह भी कहा कि व्यापार इन्वॉइस के मामले में भारत सबसे अधिक डॉलराइज देश है।

रे ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार, अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग और आस्ति बाजारों में डॉलर का प्रभुत्व आर्थिक झटकों और मैक्रोइकनॉमिक नीतियों के अंतरराष्ट्रीय ट्रांसमिशन को किस प्रकार प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वित्तीय लिंकेज काफी तेजी से बढ़े हैं। इससे दूसरे देशों पर नीतिगत उपायों का प्रभाव भी बढ़ा है। उन्होंने बताया कि डॉलर के प्रभुत्व वाली व्यवस्था में यूएस फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति किस प्रकार पूरे वैश्विक वित्तीय चक्र को प्रभावित करती है। और फिर किस तरह दूसरे देशों में वित्तीय संस्थाओं की बैलेंस शीट और उनकी जोखिम वहन क्षमता को प्रभावित भी करती है।

रे ने अपने व्याख्यान में अमेरिका के वर्ल्ड बैंकर या बीमाकर्ता बने रहने में आने वाली कठिनाइयों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वह व्यवस्था जिसमें डॉलर प्रभुत्व वाली अंतरराष्ट्रीय मुद्रा है, वह समय के साथ अस्थिर होती जा रही है, क्योंकि वैश्विक अर्थव्यवस्था में अमेरिकी अर्थव्यवस्था तुलनात्मक रूप से संकुचित हो रहा है और शेष विश्व में डॉलर देयताएं लगातार बढ़ रही हैं। अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था के वर्तमान स्वरूप की अस्थिरता को ध्यान में रखते हुए प्रो. रे ने अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था में भावी परिवर्तनों पर भी चर्चा की।

यूएस डॉलर के विकल्पों का विश्लेषण करते हुए रे ने कहा कि डॉलर को यूरो से कड़ी टक्कर मिल सकती है। लेकिन यूरो क्षेत्र के अपूर्ण आर्किटेक्चर और संपूर्ण यूरो क्षेत्र में सुरक्षित आस्ति का अभाव यूरो के अंतरराष्ट्रीकरण में सबसे बड़ी बाधा है। प्रोफेसर रे ने चीनी रेन्मिनबी के संदर्भ में कहा कि व्यापार इन्वॉइसिंग और विदेशी वित्तीय ट्रांजैक्शनों के लिए चीनी रेन्मिनबी का प्रयोग बढ़ा है, लेकिन चीन द्वारा किए जाने वाले पूंजी नियंत्रण और देश में अर्द्धविकसित वित्तीय व्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इसकी स्वीकार्यता में बाधा पैदा करते हैं।

रे ने उभरती प्राइवेट, डिजिटल और क्रिप्टो करंसी पर भी चर्चा की, जो अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था में हलचल पैदा कर रही हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने हाईटेक अंतरराष्ट्रीय भुगतान और निपटान व्यवस्था विकसित करने के लिए मुख्य केंद्रीय बैंकों के बीच होने वाली संभावित होड़ पर भी बात की। भुगतान के इस प्रकार के डिजिटल नेटवर्क से सूचनाओं के केंद्रीकरण में सहायता मिलेगी और दंडात्मक कार्रवाई समुचित रूप से की जा सकेगी, जो वर्तमान मौद्रिक व्यवस्था में नहीं है।

इस अवसर पर, एक्ज़िम बैंक के प्रबंध निदेशक श्री डेविड रस्कीना ने भी अधिक वित्तीय उदारता के साथ आने वाली अनिश्चितताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि सैद्धांतिक रूप से, उभरते बाजार वाली अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ता पूँजी प्रवाह विकास में सहयोगी होगा। लेकिन वास्तविकता में, वित्तीय उदारता दुधारी तलवार साबित हुई है। इससे उभरते बाजार वाली अर्थव्यवस्थाएं विदेशी झटकों से बुरी तरह प्रभावित होती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हाल के समय में अमेरिका द्वारा लिए गए नीतिगत फैसलों का असर अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था पर स्पष्ट दिखाई देता है और कुछ नकारात्मक प्रभाव तो परेशान कर देने वाले हैं। ■

चुनिंदा देशों का आर्थिक परिदृश्य

यूनाइटेड किंगडम

ब्रिटेन की आर्थिक वृद्धि दर वित्तीय वर्ष 2018 की 1.3% की तुलना में वित्तीय वर्ष 2019 में मामूली वृद्धि के साथ 1.4% रहने के आसार हैं। इसकी मुख्य वजहें वैश्विक मांग में कमी आना और ब्रेक्ज़िट को लेकर हुई राजनीतिक हलचल रही। ब्रेक्ज़िट और कोरोना वायरस के चलते मांग के बुरी तरह प्रभावित होने और व्यावसायिक समुदाय का विश्वास गिरने से वित्तीय वर्ष 2020 में वृद्धि दर और गिरावट के साथ 0.8% रहने के आसार हैं। वर्ष 2019 में उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति दर लगभग 1.7% रहने और 2020 में ब्रेक्ज़िट तथा कोरोना वायरस के चलते फैली अनिश्चितताओं तथा रिटेल में मुद्रा अवस्फीति के रुझानों और तेल की वैश्विक कीमतों में गिरावट के कारण घटकर 1.3% रहने की संभावना है। स्टर्लिंग का मूल्य ब्रेक्ज़िट घटनाक्रम से बहुत करीब से जुड़ा है और माना जा रहा है कि आने वाले कुछ वर्षों तक इसमें अस्थिरता बनी रहेगी। वर्ष 2019 में यूनाइटेड किंगडम का चालू खाता घाटा जीडीपी के 3.9% के साथ रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। यूरोपीय संघ के सिंगल मार्केट और कस्टम्स यूनियन से यूके के निकलने से यह चालू खाता घाटा अभी और बढ़ने की आशंका है। क्योंकि ब्रेक्ज़िट के बाद यूरोपीय संघ के साथ ट्रेड बैरियर बढ़ेंगे और व्यापार की नई शर्तें लागू होने से 2020 में निर्यातों में गिरावट आएगी। कोरोना वायरस के चलते उपभोक्ता मांग में कमी आने से आयात भी गिरेंगे और ब्रेक्ज़िट से नए कस्टम्स बैरियर सामने आएंगे। परिणामतः यूके का चालू खाता घाटा 2020 में बढ़कर जीडीपी का 4.3% तक हो सकता है।

गाम्बिया

गाम्बिया की वास्तविक जीडीपी वृद्धि 2018 की 6.6% से गिरकर 2019 में 5.4% रहने का पूर्वानुमान है। संपोषित आर्थिक वृद्धि बनाए रखने में संरचनात्मक अभाव के चलते वर्ष 2020 में वृद्धि दर के गिरकर 5.1% रह जाने के आसार हैं। गाम्बिया के प्रमुख निर्यात उत्पाद (मूंगफली का तेल) की गिरती कीमतों और आगामी राष्ट्रपत चुनावों के लिए बढ़ती अनिश्चितता के चलते आर्थिक वृद्धि मंदी रहेगी। विनिमय दर गिरने और मांग बढ़ने से 2019 में 7% के आंकड़े को छूने के बाद प्रमुख भोज्य पदार्थों की कीमतों के बढ़ने से मुद्रास्फीति दर 2020 में बढ़कर 7.1% रहने की संभावना है। पिछले एक दशक के दौरान प्राधिकारियों के अत्यधिक हस्तक्षेप से अधिमूल्यन रहने के बाद, वर्ष 2020 में डलासी के मूल्य में गिरावट जारी रहेगी और इसके एक यूएस डॉलर के मुबाकले 50.1 से 52.9 यूएस डॉलर रहने की संभावना है। वर्ष 2020 में ऋण आधारित इन्फ्रास्टक्चर से जुड़े पूँजीगत वस्तुओं के आयात की मांग अधिक होने से आयात बिल बढ़ने के चलते व्यापार घाटा बढ़ने की आशंका है। वस्तुतः जीडीपी की तुलना में चालू खाता घाटा वर्ष 2019 के 5.8% की तुलना में वर्ष 2020 में बढ़कर 6.5% होने के आसार हैं।

अर्जेंटीना

अर्जेंटीना की अर्थव्यवस्था में 2020 में भी संकुचन जारी रहने की आशंका है। तथापि इसकी वृद्धि दर 2018 की 2.7% की तुलना में 2% रहने की संभावना है। अर्जेंटीना की मुद्रा के निरंतर अवमूल्यन के चलते देश की अर्थव्यवस्था लगातार संघर्षरत है और अब कोरोना वायरस की महामारी के चलते कमोडिटी कीमतों में गिरावट आने और सभी प्रमुख व्यापार साझेदारों के कमजोर पड़ने से अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। ऊर्जा, खनन और कृषि जैसे क्षेत्रों में संभावनाओं के बावजूद, वैश्विक आर्थिक परिवेश में अनिश्चितता के चलते प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आवक कमजोर रहने के आसार हैं और कोरोना वायरस महामारी के परिणाम अभी पूरी तरह सामने आने शेष हैं। वर्ष 2020 में अर्जेंटीना की उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति दर 37.7% रहने की संभावना है और आर्थिक मंदी से उबरने के लिए प्रशासन द्वारा मौद्रिक और राजकोषीय नीति में बरती जाने वाली नरमी के चलते माना जा रहा है कि इसके बाद भी यह 20% से ऊपर बनी रहेगी। ऐसे परिदृश्य में पेसो के अवमूल्यन से भी इनकार नहीं किया जा सकता है। इसके वर्ष 2019 में एक यूएस डॉलर के मुकाबले 48.15 पेसो की तुलना में वर्ष 2020 में गिरकर एक यूएस डॉलर के मुकाबले 63.3 पेसो तक रहने की आशंका है। वर्ष 2020–21 के दौरान चालू खाता सामान्य तौर पर संतुलित बने रहने की संभावना है, किन्तु इसमें यह सुधार तभी हो सकता है, जब मुद्रा का अधिमूल्यन हो और आर्थिक सुधार हो।

चीन

चीन में कोरोना वायरस से महामारी के फैलने से वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता बढ़ गई है। चीन में जीडीपी वृद्धि दर 2019 की 6.1% से घटकर केवल 5.4% के आसपास रहने के आसार हैं। कोरोना महामारी के चलते निजी खपत और निवेशों को सबसे बड़ा झटका लगने की संभावना है। उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति वर्ष 2019 की 2.9% की तुलना में वर्ष 2020 में औसतन 5.2% के आसपास बने रहने के आसार हैं। अफ्रीकी स्वाइन फीवर के चलते आपूर्ति न हो पाने से पोर्क की कीमतें पहले से बढ़ रही थीं। कोरोना वायरस महामारी फैलने के चलते खाद्य उत्पादन और परिवहन में रुकावट आने से वर्ष 2020 में कीमतें और बढ़ेंगी। रेन्मिनबी के मूल्य वर्ष में 2019 में 1.4% की गिरावट देखी गई थी। अब 2020 में इसका मूल्य एक यूएस डॉलर के मुकाबले गिरकर 7 रेन्मिन्बी रहने के आसार हैं। घरेलू अर्थव्यवस्था पर कोरोना वायरस के चलते मंडराए काले बादल निवेशकों के लिए चिंता का विषय हैं। इसके साथ ही अतिरिक्त मौद्रिक प्रोत्साहन पैकेज से अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त भार पड़ेगा। कोरोना वायरस के चलते स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला में बाधाओं के साथ विदेशी व्यपार में भी गिरावट आने की आशंका है। वर्ष 2020 के दौरान मर्चेंडाइज निर्यात केवल 1% की दर से बढ़ने की संभावना है। इस सबके बावजूद वर्ष 2020 में चीन का चालू खाता जीडीपी का लगभग 2.1% के साथ सरप्लस रहने की संभावना है। समग्र रूप में, कोरोना वायरस से फैली महामारी के प्रभावों के कम होने और आर्थिक गतिविधियों के सामान्य होने से 2021 के बाद से आर्थिक वृद्धि में सुधार देखने को मिलेगा। ■

मुद्रा

ऑस्ट्रेलियाई डॉलर

A$ ऑस्ट्रेलिया का एक और दूसरा पुराना सह-सबंध हाल ही में टूट गया। जब-जब यूएस डॉलर जापानी येन की तुलना में बढ़ता है, ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यूएस डॉलर से ऊपर पहुंच जाता है। लेकिन मार्च 2020 में जब यूएस डॉलर जापानी येन के मुकाबले बढ़ा तो ऑस्ट्रेलियाई डॉलर में गिरावट आई। लंबे समय से चले आ रहे इस पैटर्न के इस तरह बदलने के मुख्य कारण फेडरल रिज़र्व द्वारा ब्याज दरों में अचानक कटौती करना और कोविड-19 हो सकते हैं। रिज़र्व बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया ने आर्थिक गतिविधि में स्थिरता लाने के लिए ब्याज दरों में पिछले वर्ष तीन और मार्च 2020 में दो कटौतियां की हैं और अब ब्याज दर अपने रिकॉर्ड न्यूनतम 0.25% पर हैं।

नाइजीरियाई नायरा

₦ कोरोना वायरस से फैली महामारी से वैश्विक मांग में आई भारी कमी से कैसे निपटा जाए, इस पर दुनिया के सबसे निर्यातक भी एकमत होकर कुछ कर पाने में नाकाम रहे और मार्च के दूसरे सप्ताह में तेल की कीमतों मंक भारी गिरावट देखी गई। नाइजीरिया अफ्रीका का शीर्ष कच्चा तेल उत्पादक देश है।

इस वायरस के चीन में पिछले साल फैलने के बाद से नाइजीरिया की मुद्रा नायरा 19 मार्च, 2020 को एक यूएस डॉलर के मुकाबले 371.00 के स्तर पर रही। नायरा के मूल्य में गिरावट फरवरी से ही आनी शुरू हो गई थी, जब आरक्षित मुद्रा भंडार 4.5% गिरकर 36.1 ही रह गई थी।

हालांकि नायरा अगस्त 2017 के बाद से अपने न्यूनतम स्तर पर है, जब आखिरी बार इसका अवमूल्यन हुआ था। उस समयावधि में केंद्रीय बैंक के प्रबंधन के अंतर्गत यह सीमित रेंज में ही ट्रेड की गई।

नाइजीरियाई मुद्रा को स्थिर बनाए रखने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा जून 2019 से अब तक एक चौथाई आरक्षित मुद्रा भंडार बेचा जा चुका है। केंद्रीय बैंक ने आयातकों द्वारा हार्ड करंसी के एक्सेस पर भी प्रतिबंध लगा दिया है और उच्च यील्ड वाली सरकारी कर्ज की बिक्री को बढ़ा दिया है, जिसे ओपन मार्केट ऑपरेशन भी कहा जाता है।

सरकार नायरा में स्थिरता को बनाए रखने के लिए कुछ और पूँजीगत नियंत्रण के विकल्पों पर काम कर सकती है। नाइजीरिया के राष्ट्रपति के स्थानीय उद्योगों के पुनरुद्धार की योजना को अमलीजामा पहनाने और अर्थव्यवस्था को तेल के झटके से उबारने के लिए मुद्रा का स्थिर होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

केंद्रीय बैंक नायरा में तेजी बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्रीय बैंक द्वारा नवंबर में ही यह ऐलान किया गया था कि आरक्षित भंडार में कमी आना चिंता का विषय नहीं है।

न्यूयॉर्क और लंदन मेंतेल के वायदा बाजार में 30% से अधिक की गिरावट देखी गई, जो 1991 के खाड़ी युद्ध के बाद सबसे बड़ी गिरावट है। नाइजीरियाई सरकार के राजस्व में आधे से अधिक हिस्सा तेल से होने वाली बिक्री का ही है और देश के निर्यातों का 90% में तेल का ही योगदान है।

भारतीय रुपया

₹ भारतीय रुपया लंबे समय बाद अपने न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया। कोरोना वायरस से फैली महामारी के चलते चिंता में डूबे विदेशी निवेशकों द्वारा देश के स्टॉक मार्केट से पैसा निकालने से बाजार में गिरावट के साथ भारतीय रुपये को भी भारी गिरावट का सामना करना पड़ा। निवेशकों की चिंता यह है कि इस महामारी के परिणामस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था और वित्तीय व्यवस्था पर दबाव पड़ जाएगा।

इस महामारी से इक्विटी और विदेशी विनिमय बाज़ारों में फैले भय के चलते भारतीय रुपया 23 मार्च, 2020 को एक यूएस डॉलर के मुकाबले गिरकर 76.14 के स्तर पर पहुंच गया। बेंचमार्क निफ्टी 50 को अपना सबसे दुर्दिन देखना पड़ा, जब इसमें पिछले महीने के मुकाबले 35% से अधिक की गिरावट देखी गई।

भारतीय इक्विटी मार्केट भी इस आर्थिक मंदी का शिकार हुआ है और येस बैंक डूबने की कगार पर है। विदेशी निवेशक फरवरी के उत्तरार्द्ध से भारतीय बाजारों से लगभग 4 बिलियन यूएस डॉलर निकाल चुके हैं।

आरबीआई ने 6 मार्च को देश के सबसे बड़े निजी ऋणदाताओं में से एक येस बैंक के पुनर्गठन की घोषणा की, जिससे निवेशक और हतोत्साहित हुए। बैंक को चार महीनों तक ऐसे कोई नए निवेशक नहीं मिले, जो बैंक को अपने फंसे हुए कर्ज से निकालने के लिए मददगार हों। इससे जमाकर्ताओं में दहशत फैल गई और विश्लेषकों का मानना है कि यह दूसरे बैंकों के लिए चेतावनी का संकेत हो सकता है। इससे पहले से दबावग्रस्त वित्तीय व्यवस्था और कमजोर हुई।

भारतीय रुपये में गिरावट को लेकर चिंताओं के बीच आरबीआई ने 12 मार्च, 2020 को अपने कुछ डॉलर आरक्षित भंडार की बिक्री की घोषणा की, ताकि भारतीय मुद्रा में गिरावट को रोका जा सके। आरबीआई ने वित्तीय व्यवस्था में तरलता (लिक्विडिटी) को सुनिश्चित करने के लिए ओपन मार्केटिंग ऑपरेशनों के साथ-साथ मौजूदा रेपो दर पर 3 और 1 साल की अवधि के लिए दीर्घावधि रेपो दर नीलामी की भी घोषणा की। ■

एक्ज़िम मित्र

विदेशी आपूर्तिकर्ताओं की कंपनी प्रोफाइल के सत्यापन के बारे में जानकारी

निर्यातक/आयातक ईसीजीसी लिमिटेड (पूर्व में एक्सपोर्ट क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया) से विदेशी आपूर्तिकर्ताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। निर्यातकों के लिए जारी की गई विभिन्न पॉलिसी के तहत, ईसीजीसी लिमिटेड क्रेडिट सूचना एजेंसियों,वाणिज्यिक बैंकों आदि से खरीदारों की स्टेटस रिपोर्ट प्राप्त कर विदेशी खरीदारों पर जोखिम की हामीदारी अंकित करता है।

निर्यातक / आयातक डी एंड बी बिज़नेस इंफॉर्मेशन रिपोर्टों का भी संदर्भ ले सकते हैं जो कंपनी की लाभप्रदता, वित्तीय स्थिरता और भुगतान संबंधी निष्पादन के बारे में जानने में मदद करती हैं। अधिक जानकारी के लिए, निम्नलिखित वेबसाइट देखी जा सकती है:
https://www.dnb.co.in/risk-management-solutions/finance-credit-risk/business-credit-report
https://www.dnb.co.in/risk-management-solutions/finance-credit-risk/business-credit-report

भारत से सनदी लेखाकार सेवाओं के निर्यात के लिए अवसरों की जानकारी

भारत से चार्टर्ड अकाउंटैंसी (सीए) सेवाओं के निर्यात के बारे में जानकारी के लिए, आप इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटैंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई) की वेबसाइट पर जा सकते हैं। संस्थान ने भारत से सीए सेवाओं के निर्यात के लिए एक समिति का गठन किया गया है (https: // www .icai.org / newšpost. html? postšid = 970)। समिति को निम्नलिखित कार्य सौंपे गए हैं –

- भारतीय चार्टर्ड अकाउंटैंट्स के लिए विदेशों में पेशेवर अवसरों के लिए नोडल समिति के रूप में कार्य करना
- प्रवासी एवं विदेशों में सेवा करने वाले भारतीय चार्टर्ड एकाउंटैंट्स का व्यावसायिक विकास करना,
- विश्व स्तर पर भारतीय चार्टर्ड एकाउंटैंट्स की नेटवर्किंग को बढ़ावा देना
- विदेश में अपनी समस्याओंका समाधान करने के लिए सदस्यों को चर्चापरक फोरम की सुविधा प्रदान करना
- संभावित अवसरों पर काम करने और प्रोफेशनल विकास के लिए आईसीएआई नेटवर्क के साथ विश्व स्तर पर सहयोग करना
- वैश्विक पेशेवर विकास और विश्व व्यापार संगठन से संबंधित नीति निर्माताओं के समक्ष विषय उठाना और प्रतिनिधित्व करना ।
- विश्व व्यापार संगठन/जीएटीएस के हितों की रक्षा करना और उन्हें बढ़ाना

निर्यातक भारत की व्यापार उदारीकरण और निर्यात संवर्धन संबंधी सेवाएं: सरकारी नीति निर्माण के लिए एक अध्ययन विषय पर एक्ज़िम बैंक के अध्ययन का भी संदर्भ ले सकते हैं: (https://www.eximbankindia.in/-ssets/Dynamic/PDF/Publication-Resources/SpecialPublications/STRI%20StudyšMain%20Report.pdf)

इससे उन्हें वैश्विक रुझानों और नीतिगत पहलों के बारे में जानकारी मिल सकती है।

भारत से हर्बल उत्पादों के निर्यात संबंधी जानकारी

वाणिज्य विभाग ने विभिन्न उत्पाद समूहों/क्षेत्रों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए निर्यात संवर्धन समितियों की स्थापना की है। फार्मास्यूटिकल्स एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउंसिल (फार्मेक्सिल) हर्बल निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए अधिकृत है।

निम्नलिखित के बारे में जानकारी के लिए, निर्यातक फार्मेक्सिल से संपर्क कर सकते हैं:

- विदेश में व्यापार प्रतिनिधिमंडल/क्रेता–विक्रेता बैठकें
- भारत में परस्पर क्रेता–विक्रेता बैठकें
- भारत सरकार के विपणन विकास सहायता/बाजार पहुंच पहल योजनाओं के तहत उनके दावों को प्राप्त करने के लिए सदस्यों की सहायता करना
- उत्पत्ति (मूल स्थान) का प्रमाण पत्र जारी करना
- निर्यात से संबंधित विषयों पर सेमिनार/चर्चापरक बैठकें
- विदेश से प्राप्त व्यापार संबंधी पूछताछ

साख पत्रों (एलसी) के लिए दस्तावेज प्रस्तुति करने के लिए अनुमत दिनों की जानकारी

एक निश्चित राशि का भुगतान करने के लिए दिए गए सशर्त वचन पत्र को साख पत्र (एलसी) कहा जाता है। साख पत्र आवेदक के अनुरोध पर जारीकर्ता बैंक की ओर से लाभार्थी द्वारा विनिर्दिष्ट दस्तावेज प्रस्तुत करने पर दिया जाता है। इसलिए,भुगतान कराने के लिए विनिर्दिष्ट दस्तावेज प्रस्तुत करना एक आवश्यक शर्त है। अनुपालन के लिए दस्तावेज प्रस्तुत करने का मतलब है कि वे साख पत्र में विनिर्दिष्ट नियम और शर्तों, यूसीपी 600 के लागू प्रावधानों और अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग पद्धतियों के अनुसार हैं। यूसीपी 600 के मुताबिक, लाभार्थी द्वारा अथवा लाभार्थी की ओर से परिवहन के एक या एक से अधिक मूल दस्तावेज सहित सभी दस्तावेज इन नियमों में वर्णित अनुसार शिपमेंट की तारीख के बाद 21 कैलेंडर दिनों के अंदर और साख पत्र की तारीख की समाप्ति से पहले प्रस्तुत करना अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिए, कृपया एक्ज़िम मित्र पोर्टल के अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (पत्र)खंड के स्टैंडर्ड फॉर एग्ज़ामिनेशन ऑफ डॉक्यूमेंट्स पर जाने का अनुरोध है: (https://eximmitra.in/en/helpline/letters-credit)

एससीआर नीति के तहत न्यूनतम वार्षिक निर्यात टर्नओवर की जानकारी

500 लाख रुपये से अधिक वार्षिक निर्यात टर्नओवर वाले निर्यातक एससीआर या स्टैंडर्ड पॉलिसी के लिए पात्र हैं। यह एक स्टैंडर्ड संपूर्ण टर्नओवर पॉलिसी है जिसमें एक निर्यातक द्वारा किए जाने वाले सभी शिपमेंट इस पॉलिसी के तहत कवर किए जाते अपेक्षित होते हैं। पॉलिसी के तहत निर्यातकों को 90% का कवरेज प्रदान किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए, कृपया निम्नलिखित वेबसाइट देखें: https://www.ecgc.in/shipments-comprehensive-risks-policy-scr

आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

उत्पाद का व्यापार

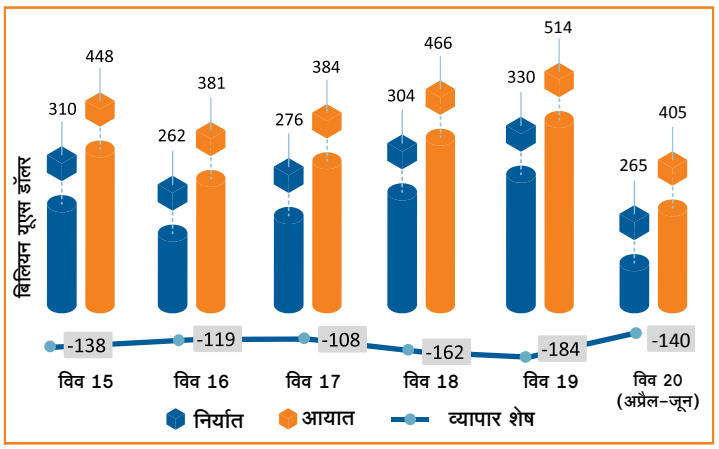

स्रोतः वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

सेवा व्यापार

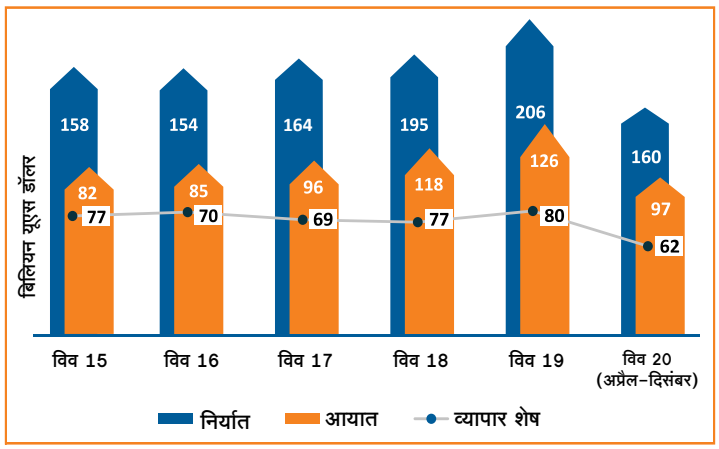

स्रोतः भारतीय रिज़र्व बैंक

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह

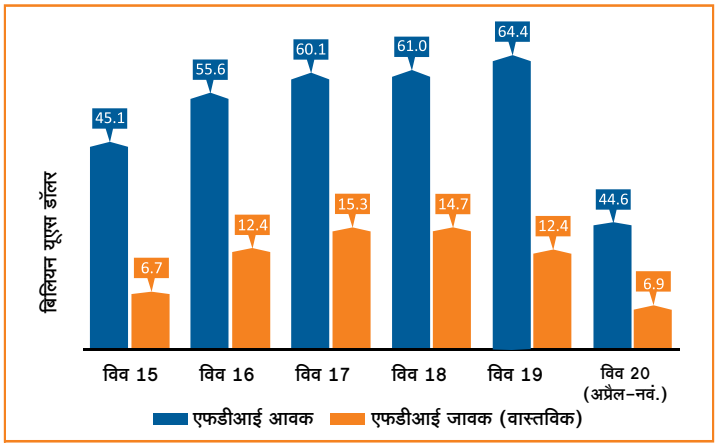

स्रोतः भारतीय रिज़र्व बैंक एवं वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

ग्राहक मूल्य मुद्रास्फीति

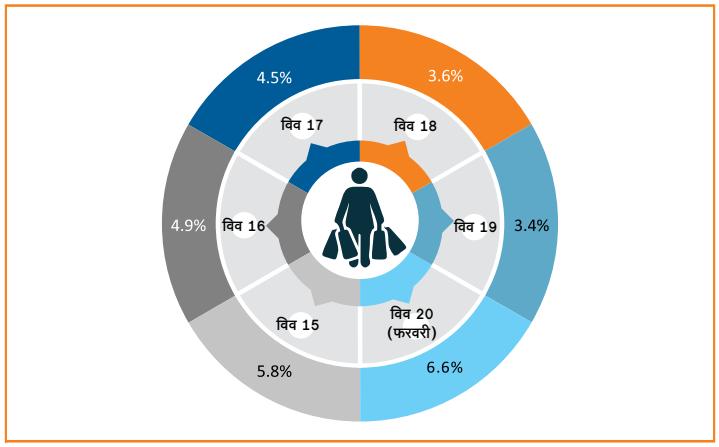

स्रोतः सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

चालू खाता घाटा

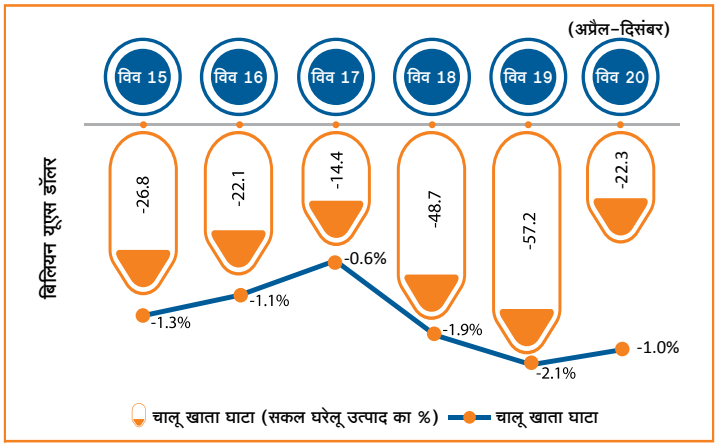

स्रोतः भारतीय रिज़र्व बैंक

सेक्टर-वार उत्पादन

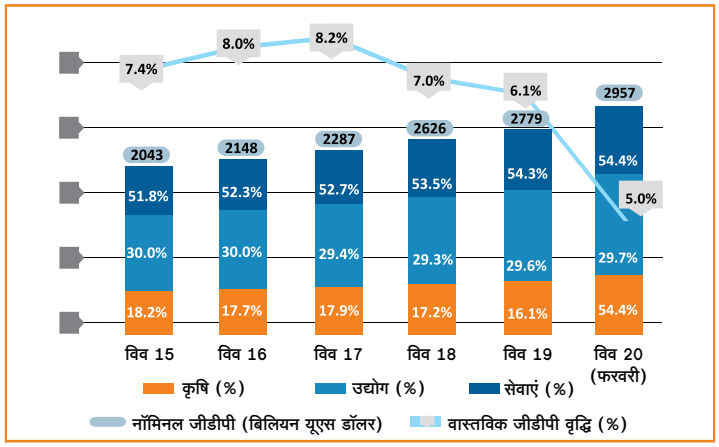

स्रोतः आईआईएफ एवं सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय *नोटः एफ – पूर्वानुमान*